इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में किसान चेतना : पंकज सुबीर कृत 'अकाल में उत्सव ' के विशेष संदर्भ में..

डॉ. जालिंदर इंगले
प्रोफेसर, शोधनिर्देशक एवं विभागाध्यक्ष
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
मनमाड जि.नासिक (महाराष्ट्र)

सदियों से धरती और किसान का अटूट रिश्ता रहा है। किसान अपनी जमीन से सर्वाधिक लगाव रखता है। अपनी जमीन ही उसका सब कुछ है। किसान के लिए खेती कोई व्यापार नहीं बल्कि उसकी जीवन शैली है। विश्व में भारत की पहचान कृषि प्रधान देश है। भारत को गांव का देश कहते हैं और गांव में खेती ही प्रमुख व्यवसाय है। देश के लगभग 65 प्रतिशत लोग किसान हैं,ज्यो पूर्णतः खेतीपर निर्भर हैं। भारत की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि है। विश्व में मंदी आती है तब भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत रखने का काम कृषि विभाग करता है इसीलिए किसानों को देश की रीड की हड्डी कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। सरकार द्वारा किसानों के हित के लिए अनेक योजनाएं तैयार की पर किसानों की स्थिति में आज भी बदलाव नहीं आए हैं। दिनों - दिन किसानों की दुर्दशा बढ़ती जा रही है। किसानों के परिवार का भविष्य आज भी अंधेरे में है इसीलिए कोई किसान को नहीं लगता कि मेरा बेटा भी किसान बने। उसे लगता है कि मेरा बेटा खेती न करें वह चपरासी की नौकरी भी करें तो अच्छा है। मेरे जीवन में जो कष्ट दुःख मैंने सहा है वह उसके जीवन में उसे ना आए। आज किसान आसमानी और सुल्तानी ऐसे दोनों स्थितियों से संघर्ष कर रहा है। कभी अचानक बेमौसम बरसात, ओले, तूफान तो कभी सूखा पडने से लगाया हुआ धन फसल निकलने से पहले ही चौपट हो जाता हैं, तो दूसरी तरफ महंगाई के कारण खाद, बीज, दवाइयां इतनी महंगी हो गई है कि उसके लिए उसे कर्ज लेना ही पड़ता है। ऐसे में फसल खराब हो गई तो कर्ज कैसे चुका है इस समस्या से देश के कई राज्यों के किसान आत्महत्या कर रहे हैं। आज शोषक का रूप बदल गया है, पर शोषण की स्थिति आज भी वही है।

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद के बाद अनेक साहित्यकारों ने खेती और किसानों की समस्या का चित्रण अपने साहित्य में किया है। प्रेमचंद जी ने 'गोदान', फणीश्वर नाथ रेनू का 'परती परिकथा',सतीश चंद्र का 'कभी ना छोड़े खेत' और 'धरती धन न अपना', नागार्जुन का 'बलचनमा', शिवप्रसाद सिंह का 'अलग अलग वैतरणी' और विवेक राय का 'लोकऋण' प्रमुख उपन्यास है। उसके बाद समकालीन कथाकारों में शिवमूर्ति का 'आखरी छलांग' संजीव का 'फास' तथा पंकज सुबीर का 'अकाल में उत्सव' प्रमुख उपन्यास है। समकालीन हिंदी उपन्यासों में कई उपन्यासकार खेती और किसानों की दुर्दशा का चित्रण किया हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से किसानों के दुख दर्द और संघर्ष को वाणी प्रदान कर रहे हैं। उनमें सूर्यनाथ सिंह, संजीव, मदन मोहन, सत्यनारायण पटेल, चरणसिंह,कैलाश बनवासी, शिवमूर्ति, पंकज सुबीर, जयनंदन आदि साहित्यकार है।

'अकाल में उत्सव' उपन्यास में किसान विमर्श :

किसान-जीवन को केंद्र में रखकर पंकज सुबीर ने अकाल में उत्सव उपन्यास की रचना की है। उपन्यास में ग्रामीण जीवन के साथ किसानों के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। गांव के छोटे किसानों के जीवन की सभी आर्थिक गतिविधियां फसल की ओर ही केंद्रित रहती है और वही फसल की उम्मीदों-आशाओं के सहारे वह अपने आप को जीवित रखता है। 'रामप्रसाद' के माध्यम से पंकज सुबीर कहना चाहते हैं कि सामान्य किसान आज भी मौसम की मेहरबानी पर निर्भर रहता है। मौसम के उतार-चढ़ाव के साथ-साथ किसानों की उम्मीदों का ग्राफ भी ऊपर नीचे होता है। आज भी महाराष्ट्र के नासिक जिले में बेमौसम बरसात और ओले के कारण अंगूर और प्याज की खेती का नुकसान हुआ है। लाखों छोटे किसानों का 'रामप्रसाद' की तरह अपनी फसल पर उम्मीदें रखनेवाले किसान है। उपन्यास में किसानों की छोटी-छोटी समस्याओं के साथ कथाकार ने किसानों की मूलभूत समस्या प्राकृतिक समस्या तथा सरकारी मुआवजा जैसी समस्याओं को बड़ी गहराई के साथ चित्रित किया है।